छायावाद

- लगभग 1916 से 1936 तक।
- जुही की कली, प्रथम रश्मि आदि आरम्भिक कवितायें। पन्त के संग्रह 'पल्लव' की भूमिका महत्वपूर्ण। निराला के संग्रह 'परिमल' की भूमिका भी महत्वपूर्ण।
- कामायनी, सरोज स्मृति, राम की शक्ति पूजा, परिवर्तन आदि अन्तिम दौर की महत्वपूर्ण रचनायें।
- नामवर सिंह के अनुसार इस शब्द का प्रचलन मुकुटधर पाण्डेय के एक लेख से।
- खड़ी बोली हिन्दी में आधुनिक कविता का वास्तविक आरम्भ।

परिभाषाएं

- ‘ससीम में असीम की झाँकी’ – महादेवी वर्मा।
- ‘नयी चित्रभाषा पद्धति पर पुरानी रहस्यवादी रचनायें।’ केवल शैली की नवीनता। विषय वस्तु पर विदेशी प्रभाव का भी आरोप। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। प्रसाद एवं निराला से वाद–प्रतिवाद।
- ‘व्यक्त जगत में आध्यात्मिक सत्ता का भान।’ – नन्दुद लारे वाजपेई।
- ‘स्थूल के विरूद्ध सूक्ष्म का विद्रोह।’ – नागेन्द्र।
- ‘छायावाद शक्ति काव्य है।’ – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
- ‘एक विशिष्ट दौर की कुछ मिली–जुली प्रवृत्तियों के लिए एक नाम’ – नामवर सिंह।

छायावाद की प्रवृत्तियाँ

- चित्रण की सूक्ष्मता।
- रूढ़ियों से मुक्ति की विद्रोह ही चेतना – स्वच्छन्दतावाद।
- वैव्यक्तिकता।
- अज्ञात की ओर लालसा, जिज्ञासा और उन्मुखता – रहस्य भावना।
- प्रकृति और नारी सौन्दर्य सम्बन्धी सूक्ष्म दृष्टि।
- राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति।
- भावावेग प्रेरित सबल कल्पना।

छायावाद का शैलीगत वैशिष्ट्य

- लाक्षणिक और व्यंजनागर्भी प्रतीक।
- प्रगति भावना और मुक्त छंद।
- मानवीकरण और विशेषण– विपर्यय नये अलंकार।
- भावानुकूल शास्त्रीय छन्दों का प्रयोग, लोक छन्दों का परिष्कार।
- आभ्यन्तर साम्य पर आधारित औपम्य– विधान।
- अंग्रेजी से अनुवाद कर के भी पन्त और महादेवी ने कुछ शब्द बनाये जैसे 'रेखांकन', 'भग्न हृदय', 'स्वर्णिम स्वप्न' –पन्त। 'उत्तमांग', 'चित्रपट', 'वाक्पट' – महादेवी वर्मा।
- निराला की कई कविताओं पर बँगला ध्वनियों का भी प्रभाव।

छायावाद : आधुनिक चेतना – आधुनिक सौन्दर्यबोध

- आधुनिक का अर्थ : निर्णय की स्वाधीनता और उत्तरदायिता।
- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में परम्परा और आधुनिकता।
- औद्योगीकरण।
- नयी शिक्षा – स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय।
- नयी न्याय प्रणाली।
- बीसवीं सदी में पूरी दुनिया का लोकतन्त्र की ओर झुकाव।
- उद्योग और सेवा क्षेत्र का विस्तार।

18वीं–19वीं सदी का पारम्परिक भारतीय समाज

- दो केन्द्रीय पहचान – संयुक्त परिवार और जातिप्रथा।
- संयुक्त परिवार में स्त्री–पुरूष सम्बन्ध।
- पहले विवाह कैसे होते थे? आधुनिक रोमांस से अन्तर।
- मध्यकाल में स्त्री– रामचरितमानस, पद्मावत।
- ‘जातिप्रथा की पहचान – छुआछूत और विवाह का घेरा’– मैक्स वेबर।
- जातिप्रथा ‘पवित्रता–अपवित्रता’ पर आधारित है– लुई ड्यूमा।
- जजमानी व्यवस्था : आर्थिक– राजनीतिक प्रणाली।

भारतीय समाज का आधुनिकीकरण

- रेलें, लोहा–इस्पात तथा अन्य उद्योग, परिवहन, यातायात, आधुनिक शिक्षा, आधुनिक कानून, विश्वविद्यालयी शिक्षा, कल–कारखाने, होटल, रेस्तरॉ, अस्पताल, नये ढंग के कार्यालय और कार्य शैलियां आदि।
- स्त्री शिक्षा में क्या समस्याएं आईं? कौन सी समस्याएं आज भी हैं? जे0ई0डी0 बेथून, मिशनरियां, बंगाल का नवजागरण, कस्तूरबा गांधी, सावित्रीबाई फुले, सितारे हिन्द, भारतेन्दु, मालवीय, सर सैयद अहमद खान आदि। वुड का डिस्पैच और उच्च शिक्षा।
- कृषि आधारित स्थिर समाज का टूटना – गोदान की कथा।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन

- औपनिवेशिक मध्यवर्ग का जन्म और प्रसार।
- विदेशी पूंजी की छत्रछाया में देशी पूंजीवाद का विकास।
- विदेशी और देशी पूंजीवाद के हितों का अनिवार्य विरोध।
- पुनरूत्थान भावना, स्वदेशी आन्दोलन और मध्यवर्ग।
- स्त्रियों का संघर्ष।
- किसानों, मजदूरों और नीची जातियों के संघर्ष।
- छायावाद में अभिव्यक्ति समाज।

छायावाद और सामाजिक तत्व

- वैयक्तिकता, स्वच्छन्दता और सूक्ष्मता।
- प्रसाद के काव्य में समाज– कामायनी में व्यक्तिवादी प्रसारशील चेतना और उसके द्वन्द्ध, सामंती वैभव का पतन, नारी –सम्बन्धी दृष्टि : लज्जा और श्रद्धा सर्ग। आँसू : संवेदना और दृष्टिकोण का अन्तर्विरोध। पेशोला की प्रतिध्वनि, महाराणा का महत्व आदि कविताओं में जागरण की ध्वनि।
- निराला– जुही की कली, वनबेला, बादल राग, सरोज स्मृति, राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास, भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर आदि कवितायें। स्वच्छन्द चेतना। मुक्त छन्द।
- पन्त की कविता – शैशव का छन्द। महादेवी के काव्य में नारी।